अध्याय-चतुर्थि

जनपद बाँध की भौगोलिक स्थिति
जनपद बाँध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
अध्ययन में सम्मिलित अनुदृष्टिविद्याकार जातियों
बॉँदा जनपद की भौगोलिक स्थिति

बॉँदा जनपद वस्तुतः बुन्देलखण्ड मण्डल का नवीनतम बंटवारा है। बुन्देलखण्ड जो प्रशासनिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में बंटा है। उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड 24°10' उत्तरी अक्षांश से लेकर 26°30' उत्तरी अक्षांश के मध्य एवं 88°10' पूर्वी देशी-दर से लेकर 81°30' पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। यह खण्ड पाँच जिलों ज़ारी, ललितपुर, हमीरपुर, जालौन और बॉँदा से निर्मित है।

6 मई, 1997 को उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने बॉँदा जनपद को दो हिस्सों में बांटकर एक नये जिले छत्रपति साहू जी महाराज नगर की घोषणा की। बाद में मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह ने शाहू जी महाराज का नाम बदलकर छत्रपती धाम (कर्वी) कर दिया।

बॉँदा छत्रपती धाम, महोबा तथा हमीरपुर जनपद को सम्मिलित कर एक नये मण्डल छत्रपती धाम मण्डल का निर्माण भी कर दिया। जिसका मुख्यालय, जनपद बॉँदा नगर बॉँदा बनाया गया।

जनपद बॉँदा के उत्तर में फतेहपुर एवं दक्षिण में छतरपुर, पन्ना, सतना (म000) स्थित हैं। पूर्व में छत्रपती धाम कर्वी (उ000) एवं रीवा (म000) जनपद स्थित है। पश्चिम में हमीरपुर एवं महोबा जनपद इसकी राजनैतिक सीमा निर्धारित करते हैं। बॉँदा जनपद का विस्तार उत्तर से दक्षिण 104 किमी10 चौड़ा है। जनपद का कुल क्षेत्रफल लगभग 4112 किमी0 है। यह पूर्व में भरतकूप, पश्चिम में मटौंग तथा उत्तर में बनदवारा और दक्षिण में कोलंबर तक फैला है।

जनपद की प्राकृतिक संरचना:

जनपद बॉँदा यमुना नदी और विन्ध्याचल की पर्वत श्रेणियों के बीच स्थित है। इसका कुछ भाग छोटकर शेष भाग ऊंचा-नीचा एवं पहाड़ी है। जनपद का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है। प्राकृतिक बनावट की दृष्टि से जनपद को
चार भागों में बाँटा जा सकता है।

1- केन नदी के पास का पहाड़ियों का मिठाइयों का

केन नदी के आस-पास तथा पश्चिम की ओर मार मिठी वाली भूमि है। यह मिठी बहुत उपजाऊ मानी जाती है।

2- मध्य का समतल घ्रान -

इस भाग में नरेन्द्र तथा बबरु तहसीलें आती हैं। यह भाग लगभग समतल है। केवल नदियों, नालों का किनारा कटा-फटा है। नहरों द्वारा सिंचाई होती है। यहाँ काबर तथा मार मिठी पायी जाती है। इस भाग में अनाज का अच्छा उत्पादन है।

3- बागे तथा गला का मैदान -

इस भाग में मंदाकिनी (परस्विनी) नदी बहती हैं, यहाँ पर राकड़, काबर, तथा पदुआ भूमि पायी जाती है। जो कृषि के लिये अच्छी नहीं होती है।

4- दक्षिण पूर्वी पठार -

यहाँ विच्यांचल की पहाड़ियों का क्रम है, पहाड़ियों के कारण यहाँ की मिठी में कंकड़ अधिक हैं। यहाँ की भूमि ऊँची-नीची है। यहाँ कांटेदार झाड़ियों पायी जाती है। इस जनपद में मार, काबर, पदुआ तथा राकड़ मिठियाँ पायी जाती है।

यहाँ के प्रमुख पहाड़ों में कालिजर का पहाड़ जो 1200 फीट ऊँचा है।

दूसरा प्रसिद्ध पहाड़ खत्री पहाड़ है। रामचन्द्र, बब्बेश्वर, बिहारला आदि प्रमुख पहाड़ हैं। यहाँ की प्रमुख नदियाँ रामनु, केन, बागे, गला, गड़रा, चाँदवाला, आदि प्रमुख हैं।

जनपद की जलवायु महादीपीय प्रकार की है। यहाँ शीत ऋतु में पर्याप्त शीत और गर्मी में तेज़ गर्मी पड़ती है। यहाँ का औसत तापमान सामान्यतया 25° सेन्टीग्रेड से कम तथा ग्रीष्म ऋतु में 48° सेन्टीग्रेड तक जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें शुद्धसा देने वाली होती हैं। इस ऋतु में भर्तवर लू चलती है। शीत ऋतु में रातें बहुत ही ठंडी रहती हैं।
जनपद बाँदा की भौगोलिक परिस्थितियों ने यहाँ के मानव पर अभिन्न छाप छोड़ी है। यहाँ की नदियाँ गर्मी के दिनों में या तो सूख जाती हैं या बहुत ठोड़ा जल रहता है। सामान्य विश्लेषण से ज्ञात होता है कि यहाँ का मनुष्य स्वभाव से भाग्यवादी है और अन्य विश्वासी भी। वर्षा की विषम परिस्थितियों से बादलों का अवलोकन कर तथा वर्षा का अनुमान करके अपना कृषि कार्य प्रारम्भ करता है। गर्मी के दिनों में नदी, तालाब, पोखर सूख जाते हैं, कुओं का पानी अपने निम्नतम बिन्दु पर पहुँच जाता है।

जनसंख्या का असमान वितरण ऊँची-नीची भूमि पर्वतों तथा ऐकान्तिक पहाड़ियों का अवरोध, वर्षा ऋतु में छोटे-छोटे नाले तथा नदियाँ अपना ऋतुतम रूप प्रदर्शित करती हैं। यहाँ के भयानक वन जो हिसाब जानवरों से भरे हैं, शिश्न की प्रगति में अवरोध उत्पन्न करते हैं। यहाँ की कच्ची सड़कें दुर्गम मार्ग, काबर मिट्टी का वर्षा काल में दल-दल का रूप धारण कर लेना तथा मार्ग को खतरे युक्त बना देना, यहाँ की ऐसी स्थितियाँ हैं जो भयावह ही नहीं अपितु संचरण में सबसे बड़ी बाधा हैं।

ग्रीष्म ऋतु में चिलचिलाती धूप, धूल धककड़ से युक्त औषधियाँ प्रचंड लू के थोड़े जन सामान्य के लिये मुसीबत से कम नहीं होते हैं। बाँदा जनपद कानपुर, इलाहाबाद तथा झांसी जनपद के त्रिकोण पर स्थित है। यहाँ अध्योग-धनों का अभाव है। बेरोजगारी विद्यमान है।

बाँदा में अधिकतर खेती मानसूनी वर्षा पर आधारित होने के कारण ग्रामीण जन शक्ति अधिकतर बेकार रहती है। बाँदा में व्यापार लगभग शून्य है, हर वस्त्र बाहरी जिलों से मंगाई जाती है, बाँदा एक मात्र नगर है। यहाँ से लकड़ी का कोयला बाँदा, लाठियाँ, तेंदू पत्ता, बालू और जानवरों की खाल बाहरी जनपदों को भेजी जाती हैं। जबकि जीवनोपयोगी हर वस्त्र का आयात किया जाता है।

जनपद में यातायात का साधन रेल मार्ग, सड़क तथा जल का प्रवाह है।
नदियों में जहां जल अधिक है, वहां जल द्वारा सागरी ले जाने तथा आवागमन होता है। बॉँदा जनपद कच्ची, पक्की सड़कों तथा रेलवे लाइन से जुड़ा है। यह जनपद मध्य रेल का जंक्शन है। बॉँदा जनपद में मुख्य रूप से दो जंक्शन पड़ते हैं—झाँसी-बॉँदा तथा कानपुर-बॉँदा, बॉँदा की लाइनें खैरार जंक्शन में मिलती है। बॉँदा से दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, जबलपुर, मुगलसंग्राम तथा हाबड़ा के लिये सीधी रेल सेवाओं उपलब्ध हैं।

बॉँदा जनपद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बॉँदा जनपद का अतीत ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं से गौरवान्ति है।

बॉँदा जनपद की राजनीतिक चेतना में महाराज छत्रसाल का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रतिमाशाली एवं महत्वपूर्ण रहा है। अंतिम नवाब अलीबहादुर (द्वितीय) का व्यक्तित्व भी बहुत प्रशंसनीय है।

उत्तर प्रदेश का दक्षिणी जिला बॉँदा है जिसकी सीमाएं मध्यप्रदेश से मिलती है। पूर्व में विद्यावल की सुरम्य श्रेणियाँ हैं, जिनमें विहृत्रूट, जैसा प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। पश्चिम में जनपद हमीरपुर, उत्तर में जनपद फतेहपुर और दक्षिण में मध्यप्रदेश दक्षिण पश्चिम में महोबा स्थित है।

बॉँदा का महत्त्व महामारत काल से चला आ रहा है। इसके समबन्ध में विभिन्न जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। कुछ लोग इसे कर्णवती नगरी तथा कुछ विराट नगरी के नाम से जानते हैं तथा कुछ लोग बामदेव ऋषि के नाम पर इसे बामदेव नगरी भी कहते हैं। बामदेव नगरी से इसका नाम बदलकर बामदा हो गया और संवर्त-मुसलमान यह बॉँदा हो गया।

वीर प्रसादिनी भूमि बॉँदा जनपद में सदैव राजनीतिक गरिमा जीवित रही है। पदमपुराण में कालिंजर को तीर्थस्थान के रूप में स्वीकार किया गया और इसे भारतीय
कला एवं संस्कृति का केन्द्र माना गया। जनश्रुति के अनुसार कर्नाटक नदी के तट पर विराट नगरी बसी थी। इसी का बिगड़ा हुआ स्वरूप बांदा है। कालिंजर से प्राप्त बौद्ध मूर्तियाँ से पता चलता है कि यह विशेष प्राचीन जनपदों में से एक है। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात गौड़ वंशीय राजाओं के पास यह राज्य रहा। तदुपरान्त चंदेलों ने इसे हस्ताक्षर किया। चंदेल वंशीय राजाओं में परिमाण का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिनके दरबार में आल्हा एवं ऊदल नामक वीर योद्धा रहते थे।

राजपूताओं की आपसी कलह का लाभ महमूद गजनवी ने उठाया और 1001 में भारत पर प्रवेश आक्रमण किया। मुहम्मद गोरी तथा उसके सेनापति फूतुबुद्दीन ऐबक ने कालिंजर पर आक्रमण किया। भारत में मुगलों का शासन स्थापित होते ही हुमायूँ ने भी आक्रमण किये। तद्परान्त शिशुराज ने भी आक्रमण किये। अकबर तथा अंग्रेजों ने भी कालिंजर को अपने आधिपत्य में रखा। औरंगजेब के समय में यहाँ चंदेलों का शासन स्थापित हो चुका था। इसके संस्थापक चम्पतराय थे। इसका विकास एवं विस्तार महाराजा छत्रसाल ने किया।

मुगल सम्राट फरुखसियर ने (1713–1719) ने अपने एक महत्वपूर्ण सरदार मोहंदस बंगो को भेजा था। इस बीच छत्रसाल अपना साम्राज्य विस्तार करने में लगे। सन् 1728 में नवाब बंगो और छत्रसाल के बीच युद्ध हुआ। शहीदा बाजीराव की मदद से छत्रसाल ने बंगो को परास्त किया। सन् 1740 में बाजीराव की मृत्यु के बाद उनके पुत्र शामशर बहादुर उर्फ कृष्ण सिंह की मृत्यु 14 जनवरी, 1761 को पाणीपत के तृतीय युद्ध अहमद शाह अब्दाली से लड़ते हुए हुई। उनके पुत्र अली बहादुर ने बुंदेलखण्ड पर विजय प्राप्त की और नवाब की उपाधि धारण की। बांदा के अन्तिम नवाब अली बहादुर (सानी) ने बांदा में स्वतंत्रता संग्राम लड़ा और अंग्रेजों के छक्के छुड़ाए। बाद में 1897 की क्रांति में भाग लिया और अंग्रेजों के बन्दीगृह से भाग कर बांदा में स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगायी। 1857 की क्रांति में बांदा ने अपनी
बौंदा में स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगायी। 1857 की क्रांति में बौंदा ने अग्रणी भूमिका निभायी सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में बौंदा के युवकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

राजनैतिक एवं धार्मिक विश्वव्यापी मुगल एवं अंग्रेजी शासन ने यहां अत्यधिक राजस्व एवं कर लगाकर विकास की गति को रोक दिया। इस मूर्तियों के निवासियों को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में अत्यन्त पिछड़ा रखने का भरसक प्रयास किया।

जनपद बौंदा का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या:

बौंदा जनपद का क्षेत्रफल 4137 वर्ग किलोमीटर है। जो उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का 2.59 प्रतिशत है। जिसका ग्रामीण क्षेत्रफल 4096.2 वर्ग किमी है। जबकि नगरीय 40.8 वर्ग किमी है। वर्तमान में बौंदा की जनसंख्या 15,00,253 है, जिसमें पुरुष 8,06,543 तथा महिलायें 6,93,710 हैं उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या का 0.90 प्रतिशत है। जनपद की ग्रामीण जनसंख्या 12,56,230 और नगरीय 2,44,023 है, जनसंख्या का घनत्व 340 प्रति वर्ग किमी है। यहाँ की साक्षरता 54.84 प्रतिशत है। जिसमें पुरुषों की 69.89 प्रतिशत और महिलाओं की 37.10 प्रतिशत है। जनपद में 1000 पुरुषों पर 860 महिलायें हैं।

तहसील बौंदा की कुल जनसंख्या 4,00,449 है। जिसमें पुरुषों की संख्या 2,15,360 है और स्त्रियाँ की जनसंख्या 1,85,089 है। तहसील बवेन की कुल जनसंख्या 3,77,021 है। जिसमें पुरुष 2,01,695 और स्त्रियाँ 1,75,326 हैं। तहसील अय्यर की कुल जनसंख्या 2,40,909 जिसमें पुरुषों की 1,30,051 और स्त्रियाँ की संख्या 1,10,858 है। तहसील नरैनी की कुल जनसंख्या 2,37,851 है। जबकि पुरुष 1,27,868 और स्त्रियाँ 1,09,984 हैं।
विकास खण्डवार वर्ष, 2000

<table>
<thead>
<tr>
<th>जनछुट्टी</th>
<th>कुल</th>
<th>पुरुष</th>
<th>लड़की</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>साढ़े-सो भुवनेश्वर</td>
<td>9613</td>
<td>5185</td>
<td>4428</td>
</tr>
<tr>
<td>गोपेश्वर</td>
<td>24021</td>
<td>13193</td>
<td>10828</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़ोखर खुर्द</td>
<td>30047</td>
<td>16501</td>
<td>13546</td>
</tr>
<tr>
<td>बबूल</td>
<td>32033</td>
<td>17391</td>
<td>14642</td>
</tr>
<tr>
<td>कमलसिंह</td>
<td>26549</td>
<td>14540</td>
<td>12009</td>
</tr>
<tr>
<td>रामचंद्र</td>
<td>39379</td>
<td>21323</td>
<td>18056</td>
</tr>
<tr>
<td>महुआ</td>
<td>42475</td>
<td>23438</td>
<td>19037</td>
</tr>
<tr>
<td>नरेश</td>
<td>43113</td>
<td>23399</td>
<td>19714</td>
</tr>
</tbody>
</table>

| सम्मिलित विकास खण्ड | 247230 | 134970 | 112260 |
| ग्रामीण | 247230 | 134970 | 112260 |
| नगरियाँ | 28813 | 15336 | 12987 |
| सम्मिलित जनपद | 276043 | 150856 | 125187 |

सन्दर्भ: सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बॉडा, 2000

जनपद बॉडा में अनुसूचित जाति की विभिन्न उपजातियों के कुल 2,76,043 व्यक्ति निवास करते हैं। जिनमें पुरुषों की संख्या 1,50,856 तथा स्त्रियों की जनसंख्या 1,25,187 है। आवास की वृद्धि से अनुसूचित जाति के 1,34,970 पुरुष तथा 1,12,260 स्त्रियाँ कुल 2,47,230 ग्रामीण परिवेश भोजन करते हैं। अनुसूचित जाति की नगरीय जनसंख्या के कुल 28,813 में से 15,336 पुरुष तथा 12,927 स्त्रियाँ हैं। उपरोक्त तालिकाओं में निवास खण्डवार अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रदर्शन किया है जनपद बॉडा में चूँकि ग्रामीण परिवेश अधिक है अतः अनुसूचित जाति की अधिसंख्य व्यक्ति गाँवों में ही निवास करते हैं।
विकास खण्डवार वर्ष, 2000

<table>
<thead>
<tr>
<th>जनपद</th>
<th>पुरुष</th>
<th>लड़की</th>
<th>कुल</th>
<th>पुरुष</th>
<th>लड़की</th>
<th>कुल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>जसपुरा</td>
<td>18007</td>
<td>4664</td>
<td>22671</td>
<td>52.2</td>
<td>16.3</td>
<td>35.9</td>
</tr>
<tr>
<td>तिन्दबारी</td>
<td>30554</td>
<td>8675</td>
<td>39229</td>
<td>55.9</td>
<td>19.9</td>
<td>39.9</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़ोखर खुर्द</td>
<td>32592</td>
<td>7478</td>
<td>40070</td>
<td>54.2</td>
<td>15.8</td>
<td>37.3</td>
</tr>
<tr>
<td>बबेरु</td>
<td>32336</td>
<td>6573</td>
<td>38909</td>
<td>51.3</td>
<td>12.8</td>
<td>34.1</td>
</tr>
<tr>
<td>कमासिन</td>
<td>24268</td>
<td>3883</td>
<td>28151</td>
<td>46.4</td>
<td>9.1</td>
<td>29.7</td>
</tr>
<tr>
<td>बिसण्डा</td>
<td>25772</td>
<td>4000</td>
<td>29772</td>
<td>44.4</td>
<td>8.4</td>
<td>28.2</td>
</tr>
<tr>
<td>महुआ</td>
<td>34543</td>
<td>8190</td>
<td>42733</td>
<td>51.1</td>
<td>14.9</td>
<td>34.9</td>
</tr>
<tr>
<td>नरेन्द्र</td>
<td>39073</td>
<td>7765</td>
<td>46838</td>
<td>44.9</td>
<td>11.0</td>
<td>29.8</td>
</tr>
</tbody>
</table>

योग ग्रामीण | 237145 | 51228 | 288373 | 49.7 | 13.3 | 33.4 |

नगरीय | 59851 | 29154 | 89005 | 60.5 | 35.6 | 49.2 |

कुलयोग | 296996 | 80381 | 377378 | 51.5 | 17.2 | 36.1 |

स्रोत - सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बाँडा, 2000

जनपद की शैक्षणिक स्थिति:

जनपद बाँडा शैक्षणिक विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। जनपदीय सांख्यिकी वर्ष 2000 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में कुल 33.4 प्रतिशत साक्षरता है, जिसमें पुरुष साक्षरता का प्रतिशत 49.7 तथा लड़की साक्षरता का प्रतिशत 13.3 है। नगरीय क्षेत्रों में 60.5 प्रतिशत पुरुष तथा 35.6 प्रतिशत लड़कियों साक्षर है। जनपद में कुल साक्षरता का प्रतिशत 36.1 तथा पुरुषों का 51.5 एवं लड़कियों का 17.2 है। इसके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है। जनपद में निरस्करता भी बहुत अधिक है।

बाँडा जनपद में औद्योगिक विकास:

बाँडा जनपद की लगभग 83 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।
यहाँ की जनता कृषि उपज और कृषि सम्बन्धी कार्यों में लगी रहती है। इस जनपद में कृषि के लिए सबसे अच्छी शाजर (एगेट) पत्थर है जिसको काट—छांटकर अम्बूर बनाने व उसमें जड़ने के काम आते हैं, विशेष रूप से नदी के लाल बालू प्राप्त होती है। बोंदा जनपद में मुख्य रूप से गिट्टी, बालू, चूना—पत्थर, पत्थर, गिट्टी के वर्तन, जूता, सीमेंट आदि सीमित क्षेत्र में चल रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह के काल में बोंदा में एक कताई मिल लगाई गयी थी। जो बड़ी मुश्किल से 4—5 वर्ष चली और अब विगत 5 वर्षों से बंद पड़ी है। सरकारी क्षेत्र में कोई उद्योग नहीं है। उपरोक्त कार्य निजी लोगों द्वारा चलाये जाते हैं। यह जनपद उद्योग शून्य जनपद के रूप में जाना जाता है।

अध्ययन में समर्पित अनुसूचित जाति:

वर्तमान अध्ययन में विभिन्न जातियों में से निम्नांकित अनुसूचित जातियों को चयनित किया गया है।

(1) चमार : चमार भारत की एक अत्यन्त प्राचीन जाति है। इस जाति के लोग भारत के लगभग सभी राज्यों में फैले हुए हैं। उत्तर प्रदेश की अनुसूचित जातियों में इनकी संख्या सबसे अधिक है। परम्परागत रूप से चमार जाति के सदस्यों का काम चमड़ा साफ करना, जूता बनाना, गन्नगी साफ करना इत्यादि रहा है। इस जाति की स्त्रियां दाढी का कार्य करती रहीं। (ब्रिग्स : 1920 : 10) (रसेल : 1975 : 403—404)

इस परम्परागत व्यवसाय के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में चमार जाति के लोग कृषक, मजदूर या बंधक मजदूर के रूप में कार्य करते रहे हैं। ग्रामीण जजमानी व्यवस्थाओं के एक आवश्यक अंग के रूप में चमार जाति ग्रामीण समुदाय में महत्वपूर्ण भाग लेती रही है।


2— Rulless, R.V.: The Tribe and castes of the Central Provinces of India, Rajdhani Book Centre, Delhi, 1975 (Reprint), P. 403.
अपने निम्न और अपवित्र आर्थिक क्रिया कलापों के कारण चमार जाति के साथ सब्ज निन्दू जाति अपमानित का स्थानरक्षक करती रही है । बहुधा मुख्य निवास क्षेत्र से पृथक चमारों की बस्ती रही है। चमार जाति अनेक अन्तर्विवाही उपजाति समूहों में बंटी हुई है इनमें दुलिया, शुलिया, जाटव, कन्नौजिया, जैसवार, ग्वालिया, कुलाहा, थर, इत्यादि प्रमुख हैं। शुलिया की चमार जाति में उच्च स्थान प्राप्त है, प्रत्येक उपजाति में छोटे-छोटे गोत्र या कुल होते हैं, जिनका नामकरण किसी पौराणिक संत या वीर पुरूष के नाम पर होता है । गोरें और फुफरे भाई बहनों में विवाह की प्रथा चर्चित है, जिस परिवार से माता या पितामही का सम्बन्ध होता है उसमें विवाह सम्बन्ध चर्चित होता है । बाल विवाह की प्रथा चमारों में अत्यधिक प्रचलित रही है । विवाह सम्बन्ध माता-पिता के द्वारा तय किया जाता है । विवाह विच्छेद का प्रचलन जाति पंचायत के अनुमति से होता रहा है । विवाह संस्कारों में सब्ज निन्दुओं का अनुकरण किया जाता है जाति पंचायत एक अत्यन्त शक्तिशाली संस्था रही है। (सचिवदान्द: 1977: 18)।

चमार सभी प्रमुख निन्दु देवी देवताओं की पूजा करते हैं तथा होली, दीपावली इत्यादि सभी प्रमुख लौहारों में भाग लेते हैं परन्तु इनमें स्थानीय देवी देवताओं की आराधना और स्थानीय लौहारों और कर्मकांडों में भाग लेने की भी प्रवृति पायी जाती है। चमारों में कुछ नवीन सम्प्रदायों का उदय हुआ है जिनमें से संबंध सम्प्रदाय, कबीर पंथ, सतनामी इत्यादि प्रमुख हैं। कुछ क्षेत्रों में आर्य समाज ने भी इनके जीवन का प्रभावित किया है।

(2) धोंबी: धोंबी जाति का परम्परागत व्यवसाय कपड़ा धोना रहा है इन्हें बरेला, रजक, पारित भी कहा जाता है। (रसेल: 1975: 519)। 2 चूकि इस जाति के लोग

गन्दा कपड़ा धोने के काम में सलग रहे हैं। इसलिये धोबी जाति को अपवित्र माना जाता है। कुछ समुदायों में धोबी को प्रातःकाल देखना अशुभ माना जाता है। धोबी जाति में जाति पंचायत अत्यन्त संगठित और शक्तिशाली रही है। विवाह, सम्पत्ति जातिगत हित इत्यादि सभी क्षेत्रों में जाति पंचायत की मूलिका महत्वपूर्ण रही है।

धोबी जाति के लोग जजमानी प्रथा के एक आवश्यक अंग रहे हैं। उन्हें उनकी सेवाओं के बदले जन्म, विवाह, मृत्यु आदि अवसरों पर सवारों के द्वारा उपहार दिया जाता रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में उन्हें कपड़े की धुलाई के बदले में अनाज दिया जाता रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में इस जाति के सदस्य खेती के काम में भी लगे हुए हैं।

धोबी जाति में बाल विवाह का अत्यधिक प्रचलन रहा है, निकट रक्त सम्बन्धियों में विवाह सम्बन्ध निषिद्ध रहा है। विवाह सम्बन्ध अनुमति रही है। वर्तमान समय में दहज का लेन-देन इनमें बढ़ता जा रहा है।

धोबी सभी हिन्दू देवी देवताओं और त्योहारों को मानते हैं। काली की पूजा विशेष रूप से करते हैं और होली, दशहरा और दिवाली को सक्रिय रूप से मनाते हैं। इनके जातिगत अराध्यें को घटोइया कहते हैं जो कपड़ा धोनेवाले घाट का देवता माना जाता है। (रसेल : 1975 : 21)।

अधूरक गाए में धोबी जाति में परिवहन हो रहा है। शिक्षित व्यक्ति नौकरी और राजनीति की ओर आकर्षित हो रहे हैं। परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसाय को अपनाने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।

(3) खटिक : खटिक जाति मुख्यतः सब्जी और फल बेचने वाली जाति है। इस जाति के कुछ सदस्य सूअर के मांस बेचने का भी कार्य करते हैं। खटिक शब्द संस्कृत भाषा।
में खट्टीका से बना है जिसका अर्थ बधिक या शिकारी है। कुछ के अनुसार उत्तर भारत में खट्टीक जाति के लोग सुअर पालने तथा बेचने का धन्या भी करते हैं। कुछ स्थानों पर खट्टीक भेड़ और बकरी पालने व बेचने का भी कार्य करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खट्टीक कृषि का कार्य भी करते हैं तथा फल के बगीचे का धन्या करते हैं।

विवाह अल्पायु में किया जाता है। विवाह विच्छेद की प्रथा प्रचलित है तथा विधवा पुनर्विवाह का भी प्रचलन है। जाति पंचायत अत्यधिक कठोर है तथा जातिगत अवयाङ्कों का उल्लंघन करने पर आर्थिक दण्ड और जाति से बहिष्कृत किया जाता है।

चूंकि खट्टीक जाति का समबन्ध बधिक और मांस विक्रय से रहा है अतः हिन्दू जाति में इन्हें अपवित्र और निम्न श्रेणी का माना जाता रहा है। पहले इन्हें हिन्दू मंदिरों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं रही है।

(4) दोमार: दोमार जाति असमृत माने जाने वाली जातियों में एक अत्यन्त निम्न कोटि की जाति रही है। इस जाति को लोग मुद्द जलाना, मल-मूत्र की सफाई करना तथा मरे हुये पशुओं को फेंकना या उसके चमड़े को निकालने का काम करते रहे हैं। मुद्द पशुओं के मांस का भक्षण तथा मदिरा पान का प्रचलन इस जाति में रहा है। सूअर बेचने व पालने का कार्य भी ये करते हैं। अपने इस निम्न कोटि के कार्यों और व्यवसायों के कारण ये जाति अत्यधिक अपवित्र मानी जाति रही है तथा ये मुख्य निवास क्षेत्र से पृथक् निवास करते रहे हैं। धार्मिक स्थलों में प्रवेश करने की अनुमति इन्हें नहीं रही है।

(5) पासी: रसेल ने पासी जाति को एक दार्विकियन व्यावसायिक जाति का माना है जिसका परम्परागत व्यवसाय पासी या खजूर के पेड़ से ताड़ी उतारना और बेचना (रसेल: 1975 : 380)।

परिश्रमी होते हैं। गाँव में ये कृषक व कृषक मजदूर के रूप में काम करते रहे हैं। पासी जाति के लोग अनेक अन्तर्विवाही समूह में बैठे हुए हैं। विवाह सबन्ध अपने गोत्र से बाहर स्थापित किया जाता है। बधू मूल्य की प्रथा प्रचलित नहीं है। विनिमय विवाह का कुछ प्रचलन रहा है। विवाह सम्बन्ध कम समय में ही स्थापित किये जाते रहे हैं। विवाह विछेद की घटनायें कम देखने को मिलती हैं। इस जाति में बालिका की तुलना में बालक का जन्म अधिक आनन्ददायक माना जाता है।

पासी लोग लगभग सभी हिंदू देवी-देवताओं में आस्था रखते हैं। पासी-जाति के लोग प्रायः सभी ल्यूहारों को मनाते हैं। जाति पंचायत अत्यधिक शक्तिशाली रही है। जाति पंचायत सभी प्रकार के अपराधों को बीते, लैंगिक अपराध, पारिवारिक कलह, जातिगत मम्मादा के विरुद्ध आवरण पर दंड किया जाता है। यह दंड जाति की बढ़ियाँ या अर्थिक दंड के रूप में दिया जाता है। पंचायत का प्रमुख व्यक्ति जाति होता है। (६) कौरी : जाति व्यवस्था परस्परागत हिंदू समाज का संगठनात्मक आधार है।

अनेकों परिवर्तनों के बाद भी प्रत्येक जाति अपनी विशेष पहचान रखती है। अनुसूचित जाति में कौरी जाति समूह के लोग सात उपजातियों कुटार, शाकुवार, सखोरी, कथरिया, अहिरवार कुरांगना तथा जूलाहा में विभक्त हैं। पेशे से बुनकर ये लोग कपड़ा, दरी बुनने का कार्य करते हैं। परन्तु आधुनिक औद्योगिक युग के सेन्ट्रिकल कपड़ों ने इनके हथकरघे से बने सूटी कपड़ों की मांग को लगभग समाप्त कर दिया है। अतः ये अधिकांश बेरोजगार व आर्थिक रूप से विपन्न है। अर्थज्ञ हेतु, ये सरकारी व गैर सरकारी नौकरी के साथ मजदूरी, डलिया, टोकरी, चटाइ आदि बनने का कार्य करते हैं। हिंदू देवी-देवताओं के साथ ये अपने कुलदेवता करतार बाबा तथा महात्मा कबीर की पूजा अर्चना करते हैं। विशेष गायन शैली कबीरी का ये संरक्षण कर रहे हैं। कबीरी में ये ढोलक, मंजीरा, हरमोनियम, निमंदा को बजाकर कबीर के दोहे व भजनों का गायन करते हैं। इनकी पूर्ण जानकारी बीजक नामक प्रस्तव में संकलित है।